कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☑ अंग्रेजी ☐

विषय .... हिंदी ....

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जीएसएम क्रीमवोव कागज का ही उपयोग में लिया गया है। 164/2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1\.

अ) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम पारिवारिक शान्ति, सद्‌भाव व प्रेम आवश्यक है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर वह अपने आपको समाज कल्याण की ओर अग्रसर कर सकता है। सभी को मिल-जुलकर कार्य करना चाहिए।

ब) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने में उन सभी तत्वों का योगदान होता है जो सार्वभौमिक एकता, भाईचारे से संबंधित है। जिस देश के निवासियों में देश-प्रेम, स्वाभिमान, सह-अस्तित्व व बंधुत्व की भावना हो, वह देश निःसन्देह प्रशंसनीय होता है।

2\.

अ) किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व हमें उस कार्य के अंत के बारे में अवश्य विचार कर लेना चाहिए। हमें कार्य से होने वाले हानि-लाभ, ऊँच-नीच आदि परिणामों की ओर बुद्धिपूर्वक विचार करना चाहिए तथा फिर कार्य आरंभ करना चाहिए।

ब) देश के सुधार के लिए हमें सर्वप्रथम स्वदेश-प्रेम करना चाहिए, जाँति-पाँति, ऊँच-नीच, पुराने रीति-रिवाजों आदि सब व्यर्थ है, इन्हें त्यागना ही उचित रहेगा। देश के सुधार के लिए सभी देशवासियों को परोपकार में अपना चित्त न्यौछावर कर देना चाहिए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3.
अ) खड़ी बोली हिन्दी में अपने शब्द-भण्डार का विकास अनेक बोलियों - राजस्थानी, पहाड़ी हिन्दी, मराठी, उत्तरी-पूर्वी हिन्दी, पाश्चिमी हिन्दी, प्राकृत आदि अपभ्रंश भाषाओं के शब्दों से हुआ है।

ब) हिंदी व्याकरण शास्त्र भाषा को शुद्ध रूप से लिखने के लिए प्रचलित शास्त्र है। इसके चार अंग हैं - शब्द, वर्ण, पद, वाक्य।

5. अ) चीन = व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य 'करता है' क्रिया का कर्त्ता।

(ब) 'से पहले = एकवचन, से=संबंध कारक, पहले- कालवाचक क्रिया-विशेषण,

6. उपर्युक्त दोहे में 'श्लेष अलंकार है। क्योंकि यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की गई है।

श्लेष से अर्थ = 'वेद शास्त्र अध्ययन करने वाले मनुष्य अभी भी मुक्ति नहीं पा पाए हैं लेकिन मुक्तिप्राप्त संतजनों, महात्माओं के अनुकरण से सामान्य लोगों ने भी मुक्ति पाली है।

7. (ब) कार्ययोजना
(अ) रूपरेखा

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	5.	[~~वाक्य में अभिधा लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है क्योंकि यहाँ वक्ता का उद्देश्य~~] ×
	8.	

रविकुमार
शासन सचिव,

शिक्षा विभाग-अजमेर
शासन सचिवालय
अजमेर
दिनांक - 10 मार्च 2018
अ०शा०प०क्र०- 622 (अ)

राज्य के समस्त संस्थाप्रधानों को पत्रान्तर्गत सूचित किया जाता है कि 'दैनिक भास्कर' समाचार पत्र द्वारा शिक्षा-सरकारी नीति के अंतर्गत कुछ त्रुटियों को उजागर किया है। अतः उन त्रुटियों की ओर सुधारात्मक कदम बढ़ाते हुए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नीति की आशा की जाती है।

हस्ताक्षर
(रविकुमार)
शासन सचिव

सेवा में
संस्था प्रधान
सरकारी विद्यालय
राजस्थान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कदली - - - - - - - - . करायो सीस ॥

10. * संदर्भ एवं प्रसंग –

उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के पद्य भाग के पाठ 'रहीम के दोहे' नीतिदोहे शीर्षक से लिया गया है। जिसके कवि, कवि रहीम हैं।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने सत्संगति तथा मनुष्य के सम्मान की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

* व्याख्या –

कवि रहीम कहते हैं कि हमारे शास्त्र में 27 नक्षत्र हैं। जिसमें से एक है - स्वाति जिसकी काल में अर्थात् स्वाति नक्षत्र की वर्षा की एक बूंद जब केले में गिरती है तो कपूर, सीप में गिरकर मोती तथा सांप के मुँह में गिर कर विष धारण करती है। भाव यह है कि व्यक्ति जिस संगति के मनुष्य के व्यवहार में रहता है उसका आचरण ग्रहण कर लेता है।

द्वितीय दोहे में कवि रहीम कहते हैं कि व्यक्ति के जीवन में सम्मान का बड़ा महत्व है। समुंद्र मंथन के समय देवताओं ने सम्मान सहित शिव जी को विष पीने हेतु आग्रह किया। शिवजी ने विष पीकर जगत में नीलकंठ नाम से प्रसिद्धी पा ली। लेकिन बिना सम्मान के देवों की पंक्ति में छिपकर बैठे राहु को श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र से सिर कटवाना पड़ा।

क द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

*विशेष - (1) प्रथम दोहे में स्वाति की एक बूंद का केले, सीप तथा सांप-मुख के संदर्भ में प्रयुक्त होने के कारण श्लेष अलंकार है।

(2) सरल ब्रज भाषा का प्रयोग है किया गया है।
(3) तद्भव तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग, पुरातन कथा संबंधी ज्ञान मिश्रित है।

11) मुझे तो मनुष्य ---------- श्मशान में।
*संदर्भ तथा प्रसंग -
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के गद्य पाठ 'मजदूरी एवं प्रेम' से लिया गया है। जिसके लेखक सरदार पूर्ण सिंह हैं।

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने चित्रकार के हाथों से बने चित्रों तथा एक यंत्र की सहायता से खिंचे फोटो की तुलनात्मक विवेचना की है।

*व्याख्या -
लेखक ने गद्यांश के माध्यम से बताया है कि हमारे हाथों से किए गए कामों में असली प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगंध आती है। 'राफेल - एक महान चित्रकार जिसने अनेक चित्रों को अपनी तूलिका के माध्यम से चित्रित किया है, में आत्मा तक के दर्शन हो जाते हैं। उन चित्रों को देखकर चित्रकार की कला कुशलता, अंतःकरण तथा उसके भावों की सौम्यता का ज्ञान हो जाता है। लेकिन एक यंत्र के माध्यम से खींचे गए निर्जीव होते हैं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उनमें चित्रकार की आत्मीयता का ज्ञान नहीं हो पाता है। इस प्रकार लेखक ने तुलना करते हुए स्पष्ट किया है कि हाथ से बने हुए चित्र 'जीवंत बस्ती तथा यंत्रों से खींचे फोटो श्मशान की भाँति होते हैं।

*विशेष -

(1) लाक्षणिकता से ओत-प्रोत भाषा का प्रयोग किया गया है।

(2) भारत के गौर्की के नाम से प्रसिद्ध पूर्ण सिंह जी ने गद्यांश के माध्यम से अपने अंतःकरण के अनुभवों को प्रस्तुत किया है।

14. 'प्रेम भक्ति' की अमृतधारा, सूरदास के पदों में निर्बाध प्रवाहित हुई है। गोपियां श्रीकृष्ण से प्रेम करती हैं लेकिन उद्धव उन्हें इस प्रेम मार्ग को छोड़कर मुक्ति का मार्ग अपनाने को कहते हैं। गोपियों का कृष्ण प्रेम निम्न पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है-

अंखियां हरि दरसन की भूखी, हमारे हरि हारिल की लकरी, बिन गोपाल बैरिन भई कुंजें॥ आदि।

15. तुलसीदास जी ने बुरे समय के साथी धीरज, धर्म, विवेक, सत्य की अडिगता, ईश-प्रेम आदि को बताया है क्योंकि असमय में मित्र भी साथ छोड़ सकता है लेकिन इन गुणों को धारण कर व्यक्ति मे विश्वास का समां बंध जाता है।

अंक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. शासन की दृष्टि में समानता महत्त्वपूर्ण है। शासन करने वाले दल को अल्पमत था विरोधी दल की उपेक्षा नही करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर उनके लोगों के मध्य विरोध उत्पन्न हो सकता है जो कि किसी भी आरूढ़ दल के लिए हानिकारक है। शासन रुढ दल को स्वयं भी अनुचित बलों का प्रयोग कर कार्य नही करना चाहिए।

17. पिता चूडामणि द्वारा शेरशाह सूरी का उत्कोच स्वीकार करने पर ममता के हृदय को गहरा आघात पहुँचा। उसने इसे अर्थ नही अनर्थ बताया और कहा कि भविष्य के लिए इतना संचय ब्राह्मण के लिए शर्म की बात है। वह कहती है कि भविष्य में क्या कोई पृथ्वी पर दानी नहीं बचेगा। उसने इस कार्य को परमात्मा की इच्छा के विरुद्ध बताया।

18.

19. शमशेर बहादुर सिंह बिम्बधर्मी कवि के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने अपनी उषा कविता में निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया है- (i) प्रातः काल नभ नीला शंख जैसे
(ii) राख से लीपा चौका (अभी गीला पड़ा है)
(iii) लाल केसर से धुली काली सिल
(iv) लाल खड़िया से लीपी काली स्लेट
(v) नीले जल में नायिका गौर वर्ण लहरों की भांति हील रहा है।

20. बसन्त की दो चारित्रिक विशेषताएँ=
(1) बसन्त बाहरी तड़क भड़क आदि से घृणा करता है वह स्वच्छता से प्रेम करता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) बसंत अपनी पत्नी मधु से गहरा प्रेम करता है इसलिए वह उसे स्वच्छता की सनक से बाहर आने के लिए कहता है।

21. 'मनुष्य और उसका काम' इस विषय में गांधीजी के विचार स्वावलम्बन से ओत-प्रेत थे। उनकी द्राष्टि में मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए इसके संबंध में वे फीनिक्स के रसोईघर को स्वावलम्बित बनाया तथा आश्रम में सभी स्वयं द्वारा बुने कपड़े पहनने के लिए प्रेरित किया।

22. बालक लहना सिंह अपने हृदय में उपजे उसलड़की के प्रति निःश्छल प्रेम में आसक्त था। लड़की की इच्छा के विपरित उत्तर सुनकर हृदय में दुःख की आँधी आ गई। वह मादक सेवक व्यक्तियों की भाँति व्यवहार - कुत्ते को पत्थर मारा, गोबीवाले से थैले में दूध गिराया। आदि व्यवहार किए।

23. एलोरा की गुफा श्रृंखला तीन अंगों में विभक्त थी।
प्रथम - बौद्ध गुफाएँ जिनकी संख्या 12 थी जिनका निर्माण सातवीं से आठवी शताब्दी मे हुआ।
द्वितीय - हिंदू गुफाएं जिनकी संख्या 17 थी जिनका निर्माण चौथी से आठवी शताब्दी के मध्य हुआ।

तृतीय - जैन गुफाएँ जो संख्या में चार थी। इनके निर्माण का समय ज्ञात नहीं है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. कवि कुँवर नारायण

कवि कुँवर नारायण को नई कविता के आंदोलक कवि माना जाता है।

रचनाएँ - आत्मजयी, वाजश्रवा के बहाने, आज और आज से पहले, हम और तुम चक्रव्यूह, परिवेश, हमारे सामने - सामने कोई नहीं आदि। मिलन यामिनी आदि। बात बोलेगी (अपूर्ण)।

भाषा, शैली - कवि कुँवर नारायण की भाषा सरल खड़ी बोली है। उन्होंने अपनी कविता "कविता" तथा "बात है फंस गई" में प्रतिकात्मक बिम्ब शैली का प्रयोग किया है।
उनकी रचनाएँ बिम्ब प्रधान न होकर प्रतिक तथा उपमानों से युक्त है।

~~सचार~~

२५. देवनारायण जी - इनका जन्म माघ शुक्ल द्वितीया को हुआ, देवनारायण जी बगड़ावत वंश के नागवंशीय गुर्जर थे। उन्होंने आत्मपारथिक शैली को जन्म दिया। राजा दुर्जनसाल के अत्याचारों से पीड़ित होकर उनकी माता सोढी खरानी उन्हे देवास ननिहाल में ले आई। वहाँ उन्होंने क्षिप्रा नदी के किनारे आत्म शिक्षा ग्रहण की। अपने अनन्य मित्र छोटू भाट के साथ मिलकर पड़ोसी राज्यों को अत्याचार मुक्त कराया। इस प्रकार उन्होंने कई चमत्कार पूर्ण कार्य किए- पीपलदे की कुरूपता दूर करना, सारंग देव को जीवित करना, सूखी नदी से पानी निकालना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आदि। अतः उन्हें राजस्थान का गौरव कहा जाता है।

रामदेव जी -

जैसलमेर के रुणेचा में जन्में रामदेव जी के पिताजी का नाम अजमलदेव तथा माता-मैणादे था। रामदेव जी बचपन में उफनते दूध को नीचे रख के चमत्कार दिखाया। बाद में "जम्मा जागरण" आंदोलन के माध्यम से दलितों की सुरक्षा की। उन्होंने आयुर्वेद में दीक्षा ग्रहण की तथा कई चमत्कार पूर्ण कार्य किए - भैरव तांत्रिक को मारना, पाँच पीरों को मक्का से मंगाना, बहन सुगना के पुत्र तथा सारथिये को जीवित करना लखी बनजारे की मिश्री को नमक बनाना। आदि। उन्हें दलितों का मसीहा कहा जाता है। उन्होंने बस्ती में हैजा फैलने पर लोगों की सेवा-सुश्रुषा की

संत जम्भेश्वर -

संत जम्भेश्वर का जन्म जन्माष्टमी को हुआ। उन्होंने प्रकृति प्रदत्त 29 नियम दिए जो [बिश + नौ] था जिन्हे मानने वाले बिश्नोई कहलाए। संत जम्भेश्वर ने राजा शेरशाह को गौ हत्या न करने के लिए मना लिया। इन्होंने तथा इनके शिष्यों ने पेड़ की रक्षा हेतु अनेक कार्य किए।

इनकी संप्रदाय की औरत अमरता बाई ने तथा लगभग 363 लोगों ने खेजड़ली गांव में खेजड़ी के वृक्षों को बचाने

के लिए बलिदान दे दिया। इस प्रकार उस ~~गांव~~ गाँव में खेजड़ी के वृक्ष काटना तथा हिरणों को मारना दोनों ही अवैध घोषित कर दिए गए।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि देव नारायण जी रामदेव जी तथा संत जम्भेश्वर जी राजस्थान के गौरव हैं। हमें इनके सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। आज भी इनकी याद में अनेक मेले आयोजित किए जाते हैं।

12. "बाजार में एक जादू है"- यह बात सत्य है। बाजार एक आकर्षण पैदा कर अपने ग्राहकों को वस्तुओं को खरीदने हेतु प्रेरित करता है। लेखक के तीन मित्र के उदाहरणों से यह स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रथम उदाहरण- लेखक का प्रथम मित्र का मन खाली था वह जब बाजार से लौटा तो उसके हाथों में काफी डिब्बे, सामान थे। पूछने पर उसने बताया कि यह सब उसकी पत्नी के कारण खरीदा गया है। इस उदाहरण ~~के~~ में मित्र को अपनी आवश्यकता का ज्ञान नहीं था।

द्वितीय उदाहरण- द्वितीय उदाहरण लेखक अपने उस मित्र का देता है जिसे अपनी आवश्यकता का ज्ञान तो था परन्तु वह बाजार में इतनी सजावट पूर्ण वस्तुओं का आकर्षण ~~देक्र~~ देखकर खाली हाथो लौट आया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तृतीय उदाहरण - तृतीय उदाहरण लेखक भगतजी का देता है। जिनका मन खुला था उन्होंने अपनी आवश्यकता की वस्तु जीरा व नमक पसांरी की दुकान से खरीदी तथा चौक को छोड़कर चले आए। वे संतोषी थे। उन्हे अपनी आवश्यकता का ज्ञान था। बाजार का जादू उन पर नही चल पाता।

इस प्रकार हम देख सकते है कि बाजार का जादू उन्हीं लोगो पर चल पाया जिन्हें अपनी आवश्यकता का ज्ञान नही था। भगत जी जैसे व्यक्ति बाजार के जादू से बचकर बाजार को सार्थकता प्रदान करते है।

अथवा

13. कवि बिहारी ने अपनी काव्य धारा में उक्ति वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थ गाम्भीर्य, अर्थ विस्तार आलंकारिता तथा कल्पना का समाहार शक्ति का विश्लेषण किया है।

वैचित्र्य अन्योक्ति में कवि ने कृष्ण भक्ति के द्वितीय दोहे में राधा-जी की भक्ति का वर्णन कर पाठकों को उनके रूप सौंदर्य की ओर आकर्षित किया है। प्रस्तुत दोहे है →

* मेरी भव बाधा .... हरित दुती होई।।

कवि बिहारी ने अपने दोहे में अलंकारप्रियता को बखूबी व्यक्त किया है उन्होने उपमा, रूपक अनुप्रास आदि शब्दालंकारो का प्रयोग किया है। * सघन, कुंज छाया .... देत।।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उन्होने नायिका के सौंदर्य मे अपनी कल्पना शक्ति तथा अर्थ विस्तार का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

(1) झीने पट में झुलमुली .... डाल ॥

(2) कहत, नटत, रीझत .... नैनन सु बात॥

(3) दीपशिखा सी देह .... उज्यारो गेह॥

आदि दोहों में नायिका के मन की अंतर्भावना को व्यक्त किया कवि ने नायिका जब अपने हृदय प्रेम को नायक को बताने में असमर्थ होती है तब अर्थ-गाम्भीर्य का वर्णन किया है कि वह कागज पर भावनाएं लिखती है तो आंसू से कागज गल जाता है और कहने में लज्जा आती है।

25. टीवी समाचार की विशेषताएं =

(1) टीवी दृश्य एवं श्रव्य दोनों का संयुक्त माध्यम है। इसके माध्यम से समाचारों की घटनाओं एवं दृश्यों को देखा भी जा सकता है।

(2) टी.वी समाचार पाठकों को समाचारों की ओर अत्यंत आकर्षित करते है। दर्शक इससे चूक नही सकता।

(3) टी. वी विस्तृत समाचारों को माध्यम है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

26. संपादक के नाम पत्र लिखते समय हमें भाषा, विचार तथा अर्थ आदि का उचित संयोजन संबंधी बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। संपादक एक औपचारिक व्यक्ति है अतः औपचारिक भाषा, शैली तथा विधि में पत्र लिखा जाना चाहिए। ज्वलंत मुद्दे को पूर्ण उद्‌घाटित करना चाहिए।

27. किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद व प्रकाशन के पूर्व उसकी उपयुक्तता, भाषा, त्रुटियों तथा साक्षात्कारदाता के भावों आदि का उचित समेकन कर ; उचित तथ्यों के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार हमें साक्षात्कार के माध्यम के अनुरूप साक्षात्कार का समायोजन करना चाहिए।

28. यदि हमे जीवन मे पत्रकार बनना पड़े तो हम ~~समाचार~~ टीवी पत्रकारिता का चुनाव करेंगे क्योंकि यह एक सुरक्षित तथा सरल प्रणाली से की जाने वाली कार्यप्रणाली के अंतर्गत आता है। एक समाचार पत्रकार की विशेष ~~तु~~ तुलना में टीवी पत्रकार एक विशेष ख्याति प्राप्त व्यक्ति है। टीवी के अंतर्गत उसे पूरा विश्व जाना पाता है और उसके विचारों को सुना जाता है। एक टीवी पत्रकार अपने हाव भावों, उचित वाणी तथा भाषा (चमत्कारिक) से अपने चैनल की ख्याति को बढ़ाता ही है परन्तु वह अपनी ख्याति तथा कार्य सुरक्षा बढ़ाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29. यात्रा की विशेषताओं को मोहन राकेश ने अपने शब्दों में पूर्ण आलोकित तथा सौम्य चित्रण किया है। मोहन राकेश के अनुसार यात्रा रोज के द्वन्द्वपूर्ण जीवन से अलग निकाला या व्यतीत किया गया समय है। इसमें व्यक्ति अपने वातावरण तथा प्रकृति तथा समाज के अनुकूल रहकर उसमें रम सकता है। यात्रा, मनुष्य के रोजमर्रा जीवन में चल रहे द्वन्द्वों, परेशानियों तथा दुःखों से व्यक्ति को बाहर निकालकर व्यक्ति को सुखद विश्रांति की ओर ले जाती है। इस प्रकार मोहन राकेश ने यात्रा को अपने अनुभवों से जोड़कर जीवन्तता प्रदान की है।

5. चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का सुगंधित पुष्प है। वाक्य में अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है। क्योंकि वाक्य में शब्दों का मुख्यार्थ ही ज्ञात होता है वक्ता का उद्देश्य किसी लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ की ओर न होकर सीधे-सीधे फूल की सुगंध तथा उसके बाहरी सफेद वर्ण से पाठकों को ज्ञात कराना है अतः वाक्य में अभिधा शब्द शक्ति है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. बालिका शिक्षा

* प्रस्तावना -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता"

उप

उपरोक्त संस्कृत पंक्ति में नारियों का महत्व स्पष्ट करती है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता है।
इसी बात को स्पष्ट करते हुआ आज के समाज में बालिका शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया गया है। बालिका एक परिवार की ही नही अपितु एक राष्ट्र की अमूल्य निधि है अत: नारी शिक्षा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

* नारी शिक्षा की आवश्यकता -

आज के इस प्रगतिशील युग में देश के विकसित होने की मांग बढ़ी है। आज की नारी यदि शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार को भी शिक्षा की ओर प्रेरित कर पाएगी। बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु आवश्यकता -

* लिंगानुपात में वृद्धि करने हेतु
* देश की साक्षरता दर को बढ़ाने हेतु
* विकासित राष्ट्रों से प्रतिस्पर्धा
*

आदि ऐसे अनेक पहेलु है जिनमें बालिका शिक्षा की

बढ़ावा दिया जाना महत्वपूर्ण समझा गया है। प्राचीन युग की नारियां - देवी गार्गी, मैत्रेयी, कौशल्या, सीता क्या वे शिक्षित नही थी ? इसी प्रश्न को आगे बढ़ाया जाए। मध्यकाल में नारियों की शिक्षा में बाधा पड़ने की वजह से आज भारत नारी शिक्षा में पिछड़ गया है व विकासित राष्ट्रों की श्रेणी में नही आ पाया है।

बालिका अनेक खेलों, व्यवसायों, राजनीति क्षेत्रों में पुरुषों का कंधो से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है. इसी को प्रोत्साहन देने हेतु आज नारी शिक्षा को प्रोत्साहन देना जरुरी हो गया है।

ज्वलंत मुद्दा कन्या भ्रूण हत्या का है। आज की नारियाँ अशिक्षित होने के कारण ही पुराने अंधविश्वास, रूढ़ियों की छलपूर्ण बातों में आकर कन्या भ्रूण हत्या जैसे निर्मम अपराध को बढ़ावा देती है या अंजाम देती है।
अतः नारी शिक्षा की आवश्यकता चरम बिंदु पर है।

* बालिका शिक्षा- प्रोत्साहन -
आज वर्तमान युग की नारियां मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, IPS - किरण बेदी, प्रतिभा पाटिल सुनिता विलियम्स, गायिका - लता मंगेशकर, कल्पना चावला, मेरीकोम, सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल आदि खिलाड़ी, अभिनेत्री - श्री देवी, प्रियंका चोपड़ा आदि क्या आज बालिका शिक्षा की दर्ज पर आगे न बढ़ पाई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

राजस्थान सरकार ने भी बालिका-शिक्षा प्रोत्साहन हेतु अनेक योजनाएँ चलाई है जिससे बालिका शिक्षा प्रोत्साहन में वृद्धि हुई है।

* गार्गी- पुरूस्कार वितरण योजना =
– 75% से अधिक प्रतिशत बनाते पर 10वीं 12वीं की बालिकाओं हेतु।

* निःशुल्क स्कूटी वितरण योजना =
– अधिक प्रतिशत बनाने वाली सरकारी-ग्रामीण बालिकाओं हेतु।

* लेपटॉप वितरण - इन्दिरा गांधी योजना
*
आदि ऐसी अनेक योजनाएँ है जो शिक्षा के क्षेत्र में बालिका प्रोत्साहन हेतु चलाई गई है। आज की नवीन योजनाओं में "आपकी बेटी योजना" भी महत्वपूर्ण है।

साथ ही आज कॉलेज तथा महाविश्वविद्यालयों में अध्ययन करने वाली विभिन्न छात्राओं को अनेक छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जा रही है।

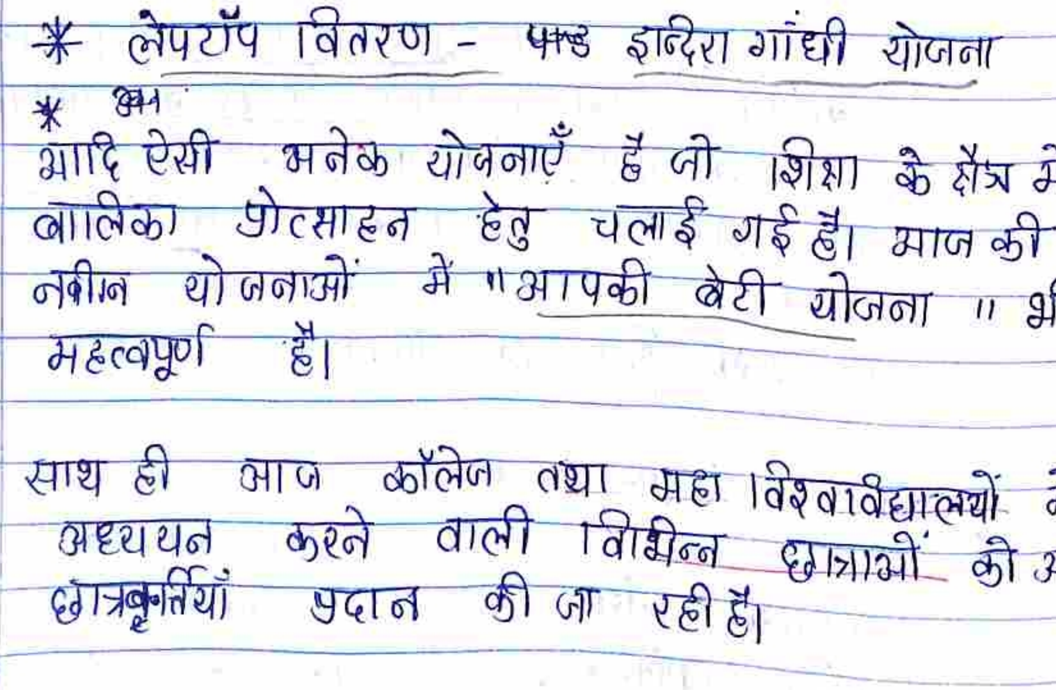

परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार –

आज के इस प्रतिस्पर्धी तथा वैज्ञानिक युग में बालिका - शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। अत: आज हमें भी जन - जन में यही मुहिम चलानी चाहिए कि बालिका पढ़ाओ - बालिका बचाओ। वे पढ़ेंगी जग पढ़ाएँगी।

आदि नारी को सिर्फ बातचीत ही नही किया जाना चाहिए बल्कि इसकी प्रतीति भी होना परम आवश्यक है।

" समाप्त "